ब्यूटी, बेबो और उनकी दोस्तों ने लिया पंगा

और अन्य किस्से

बेबी
कल किस वक्त? 8:15 PM

भावना
मोर्चा 11 बजे सुबह शुरू होगा... 8:16 PM

श्रेया
कोई मेरे साथ आज फिर से ज़रा पुलिस के पास चले... 8:16 PM

अंजलि
उसी समय तो मेरा बायोलॉजी का ट्यूशन है। मैं 12 बजे तक आऊँगी। 8:18 PM

ब्यूटी
मौसमी अपनी 13 साल की बेटी को ब्याह देना चाहती है। उसे डर है कि कहीं वह भाग न जाए। चलो उससे बात करते हैं। 8:19 PM

मोती के लिए जो अचानक चला गया, ठीक उसी वक्त जब कितना कुछ होनेवाला था–

> ...इसे (सब) अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाना है...उसको हरेक के संदर्भ में रखकर देखना है...मेरे लिए ये सब कुछ शिक्षा का हिस्सा हैं...मैं शिक्षा के उन फायदों को तवज्जो नहीं देता जो लड़कियों के जल्द विवाह को टालेगी या फिर अब कम बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। समाज के मुताबिक ये सब 'अच्छी लड़की' और अच्छी औरत' की भूमिकाएँ हैं ताकि उनको सुविधाएँ हासिल हों...यह सोच पुराने नज़रियों से भिन्न नहीं है। यह सोच एकदम बेकार है। यह शोषण का ही तरीका है...दरअसल आपको अच्छा नौकर चाहिए। यह नई भाषा में पुराने ढाँचे को ही बरकरार रखता है। मेरे हिसाब से शिक्षा का हासिल है शोषण और भेदभाव को खत्म करना।
>
> – मोती, 2015

d,fijkbV % lnHkkouk VLV

çFke lLdj.k % flrcj] 2016
f}rh; lLdj.k % uocj] 2016

ifjdYiuk % fnIrk Hkkx
lEiknd % fnIrk Hkkx vkSj fn'kk efYyd
fp=kdu % ,d:i lk/kq vkSj 'kferk pVthZ
'kks/k lgk;d % dforK nonkl
vkys[k % 'kckuh gluokfy;k
vuqokn % iokZ Hkkj}kt
lTtk % vuqt vxzoky
eqæ.k % –f"V fçVlZ] 9810277025

çfr;ksa ds fy, lEidZ djsa %
lnHkkouk VLV
ch&64] nwljh eafty]
lokZn; bUDyso]
ubZ fnYyh&110017
sadbhavna.lucknow@gmail.com

vkoj.k fp= % ,d:i lk/kq] 'kferk pVthZ
e/; i`"B % 'kferk pVthZ

vefjdu T;wb'k oYMZ lfoZl **(AJWS)** dk lg;ksx ls ;g fdrkc çdkf'kr gqbZ gSA

fo"k; lph

mfeyk erkMdj cuu dk [okc ¼yfdu [okc vkj Hkh g½ 13
fp=kdu % ,d : i l/k

xyk c pyh l?k dk lPpk bfrgkl 33
fp=kdu % 'kferk pVth

C;Vh] cck vkj mudh nkLrk u fy;k ixk 53
fp=kdu % ,d : i l/k

vkHkkj 73

lxBuk dh lph 74

अपनी बात

सिर्फ एक समूह लड़कियों का

लड़कियों से जुड़ी हुई संख्याओं, नीतियों, फिल्मों और रिपोर्टों के गलियारे से आप निकलती हैं तो आपको अहसास होता है कि उनमें सच्चाई का पुट कम होता चला जाता है और वे सुदूर काल में स्थित विज्ञान कथाओं की अजूबा मालूम पड़ती हैं। हकीकतों से परे ये काल्पनिक कहानियाँ हैं। सही मायने में ये ठीक–ठीक उन लड़कियों की कहानियाँ नहीं हैं जिन्हें हम जानती हैं या वैसी लड़कियों की भी नहीं हैं जो अरसा नहीं गुज़रा हम खुद थीं।

यह किताब अलग–अलग पीढ़ियों की लड़कियों की साझा कोशिश का नतीजा है। बहुत सारी नौजवान शख्सियतों की 'जीवन कथा' है। लड़कियों और औरतों की कथा है जो बड़ी होने के मज़े और उत्तेजना को साथ–साथ महसूस कर रही हैं और बारीकी से उसे देख भी रही हैं।

ये किस्से हैं। ये लड़कियों की अपनी ज़िंदगी के तजुर्बे हैं जिनकी कई परतें हैं और जो खासे पेचीदा हैं। ध्यान रहे हमारी लड़कियाँ खास वक्त और जगह, वर्ग और जाति की पहचानों से जुड़ी हैं। इसको लेकर कोई गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। इन किस्सों के ज़रिए इस दुनिया के मुताबिक ढलने और उसकी खींची सरहदों को पार करके उसे अपना बनाने की जद्दोजहद हमारे सामने आ पाएगी, हम यह उम्मीद करती हैं।

ये ग्राफिक किस्से लड़कियों की निगाहों से दुनिया को देखने की हमारी कोशिश हैं। दुनिया के लिए लड़कीपन[1] का खयाल हमेशा दिलचस्पी का रहा है, लेकिन आज के वक्त में इसने एक विशाल रूप ले लिया है। अब दुनिया के विकास की नीतियाँ और संसाधनों की आवाजाही की शक्ल इससे तय होती है। ज़िंदगी के हर खित्ते में लड़कियों की मौजूदगी और उनमें निवेश से होनेवाले फायदे को लेकर ढेर सारी बातें होती हैं। इस दुनिया ने लड़कीपन का जो एक खूबसूरत चौखटा गढ़ा है हम उसे इस पतली सी जिल्द में पूरी तरह से उलट–पुलट कर और उसकी सीवन उधेड़कर आपके सामने रख देना चाहती हैं। हम लड़की की निगाह से सबकुछ देखना और परखना चाहती हैं। किशोरावस्था को जिस किस्म के अँधेरे और दहशत भरे इलाके की तरह चित्रित किया जाता है आखिर हमारी लड़कियाँ और औरतें उस अवस्था से गुज़रकर बड़ी होने का काम कर ही कैसे पाती हैं? जिन पीढ़ियों की औरतों के साथ लड़कियाँ बड़ी होती हैं उनसे विरासत में मिलनेवाली राजनीति और गोलबंदी के इतिहास क्या हैं?

ये किस्से हमारी बालिग फंतासियों पर सवाल उठाते हैं–

- किशोरावस्था या लड़कीपन कभी भी आदर्श व्यक्तियों की कथाएँ नहीं हैं।
- इनमें लड़कियाँ परंपराओं की शिकार भर नहीं हैं।
- वे केवल समाज के हिंसक जेंडर आधारित रिवाजों के दायरे में ही बँधी नहीं हैं।
- उनकी कहानियाँ केवल कामुक देह के सपनों की उड़ान नहीं हैं।
- उनके किस्से केवल लड़कियों की असीमित क्षमताओं से शुरू होकर उसी पर खत्म नहीं होते हैं।

रोज़ाना की ज़िंदगी में लड़कीपन की खोज–बीन होती है, उसे लेकर मोल–तोल होता है, उससे इन्कार की कोशिश होती है। देह व दिमाग के विविध अनुभवों को आमने–सामने रखकर देखने, उनकी साझेदारी करने और उनके उलझने के मज़े लिए जाते हैं। जब लड़कियाँ समाज की परिपाटियों और उम्मीदों के फंदों का सामना कर पाती हैं तब लीक से हटकर चल पाती हैं और उनका विकास होता

[1] लड़कीपन

है। अक्सर यह समूहों और संगठनों का हिस्सा बनकर हो पाता है जो हमारी मदद करते हैं, हमें पल्लवित करते हैं और हमारी नींव मज़बूत करते हैं...

शोधकर्ताओं, लेखकों और नारीवादियों की भूमिका में हम औरतों के आंदोलनों का हिस्सा रही हैं और कई पीढ़ियों में हमने उनके रूपों को बदलते हुए देखा है। वह पितृसत्ता हो या जाति या वर्ग या नस्ल इनमें से किसी पर भी टिके दमनकारी ढाँचे को तोड़ने के लिए अथवा स्थानीय या अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों से निबटने के लिए संगठित होना औरतों की एक महत्त्वपूर्ण रणनीति रही है। चाहे वह 'औपचारिक' तरीका हो या 'अनौपचारिक', औरतें साझा विषय पर एकजुट होती रही हैं।

पूरी दुनिया में पिछले कई दशकों से औरतें अपने बलबूते या महिला संगठनों और गैर–सरकारी संगठनों (NGO) की मदद से एकजुट होती आई हैं। कभी–कभी राज्य की मदद से भी वे संगठित हुईं। उन्होंने अपनी संख्या का इस्तेमाल अपने निजी व वैयक्तिक संघर्षों और अनुभवों को बदलने में किया। वे संघर्ष और अनुभव राजनीतिक रूप से परिवर्तनकारी बने। 2015 में हमने किशोरियों और युवतियों के साथ काम करनेवाले ऐसे ही 7 संगठनों के अनुभवों को इकट्ठा किया। यह किताब उसी अध्ययन का नतीजा है।

अपने अध्ययन के दौरान हमने लगभग 150 लड़कियों, औरतों, कार्यकर्ताओं और शोधकर्ताओं से बातचीत की। उसके बाद कई क्षेत्रीय और राष्ट्रीय विचार–विमर्श व परिसंवाद आयोजित किए गए। उनसे बहुत दिलचस्प नतीजे सामने आए। इन्हीं नतीजों से हमें भी समझ आया कि किस तरह आज की लड़की की छवि को गढ़ा जा रहा है जो धरातल से दूर और विज्ञान कथा की पात्र जैसी लगती है। नीति संबंधी उद्घोषों में लड़कीपन का जो खयाल गढ़ा जाता है वह खासा उपकरणवादी है। इसका दावा है कि यह 21वीं सदी की एक ही नहीं, सारी समस्याओं का हल कर देगा।

सामाजिक परिवर्तन को लेकर अचानक उठे शोर–शराबे से हमें ताज्जुब हुआ कि यह भुला देना चाहता है कि औरतों के आंदोलन खुद कितने परिवर्तनकारी रहे हैं और इस बात पर बिल्कुल खामोशी है कि औरतों के समूहों ने किस तरह लड़कियों की ज़िंदगियाँ बदल दी हैं।

अक्सर लड़कियों पर जो रिपोर्ट सामने आती है, उनमें हमारे सामने एक दुखी कन्या पात्र पेश की जाती है जो जल्दी ही एक 'सुपर कन्या' में बदल जाती है। इन्हें उन तरीकों का बहुत कम गुमान है जो लड़कियों ने अपनी चाहतों को पूरा करने के लिए लड़ने के दौरान अख्तियार किए। दस्तावेजों में पेश की गई दुखी कन्या अपनी परेशानियों में अलग–थलग पड़ी रहती है, उसे स्कूल से बाहर कर दिया जाता है, उसकी शादी जल्दी कर दी जाती है। उसको सबसे अंत में खाने को मिलता है। उसे हँसने, खेलने और फोन पर बात करने की इजाज़त नहीं है। स्कूल जाते ही उसके भीतर की महाशक्ति फूट पड़ती है। आपको इसका अंदाजा हो इसके पहले ही वह एक जीर्ण–शीर्ण (टूटी–फूटी) कक्षा में जाकर अपनी ज़िंदगी और अपनी दुनिया को बदल डालती है जहाँ का पाखाना भी बेकार पड़ा है।

दुर्भाग्य की बात यह है कि असली ज़िंदगी में ऐसी कम हीरोइनें हैं और जिन्हें देखकर हम सराहते नहीं थकते, उनके पीछे किसी न किसी समूह या सामाजिक संपर्क का हाथ होता है।

नीति संबंधी दस्तावेजों और अध्ययनों में लड़कियाँ एक अनोखे, व्यक्तिगत उदाहरण के रूप में पेश की जाती है। ऐसी लड़कियों और औरतों का इतिहास जानने से हिम्मत मिलेगी जिन्होंने उनसे पहले उन जैसी ही लड़ाइयाँ लड़ी हैं। नौजवान लड़कियों की कोशिशों के साथ–साथ या उनके पहले जहाँ औरतों के समूह रहे हैं वहाँ हमने यह सब होते हुए देखा है। औरतों की गोलबंदियों और उनके नतीजों ने पिछले 30 सालों में लड़कियों की बदलाव की चाहत को काफी बल दिया है। औरतों के समूहों की ठोस मौजूदगी हो या महिला आंदोलनों से मिलनेवाली सीखें हों जिन्हें जज़्ब कर लिया गया है, सबने मिलकर लड़कियों को साझा कदम उठाने में मदद की। (मसलन मजदूरी से जुड़े शोषण की प्रक्रियाओं के खिलाफ आंध्र प्रदेश का 40 दिन का प्रतिरोध या मुंबई में औरतों के लिए सार्वजनिक शौचालय की माँग के लिए चलाया गया पेशाब का अधिकार अभियान और लड़कियों का इन सबसे रिश्ता)

लेकिन औरतों के समूहों और लड़कियों के बन रहे समूहों के बीच का रिश्ता बिल्कुल आदर्श हो, ऐसा नहीं है। औरतों को लड़कियाँ कई बार धुँधले और रूमानी खयालों में खोई हुई लगती हैं और लड़कियों को औरतें अक्सर कुछ ज़्यादा ही बोझिल मालूम पड़ती हैं। लेकिन दोनों को मालूम है कि उनकी ज़्यादा बड़ी लड़ाई अभी बाकी है और उसमें वो दोनों एक ही पाले में हैं।

समूह बनाना और उन्हें चलाना सिर्फ इतिहास से सीखने का मसला नहीं है। यह निरंतर जूझने और मेहनत वाला काम है। जिन समूहों के ढाँचों और अंदरूनी तौर–तरीकों को बहुत ध्यान से गढ़ा गया है, वे ही समूह कामयाब रहे हैं और आगे चले हैं। इन समूहों में कारगर नेतृत्व है, अपनी देख–रेख में नए साथियों को सिखाया जाता है और समूह को खड़ा करने में बहुत कुछ झोंक दिया जाता है। औरतों के समूहों में एक स्थिरता और टिकाऊपन है। यही नहीं, औरतों के समूहों के काम करने की जगह तय करने में उनकी भूमिका होती है और वे समूहों को समय भी दे पाती हैं। जबकि लड़कियों के समूहों में पढ़ाई–लिखाई, शादी–ब्याह, रोज़गार, बच्चे – हर कदम पर हम बदलाव और अनिश्चितता दोनों ही देखते है।

लड़कियों के समूह को लचीला होना पड़ता है। उन्हें नए लोगों, नई जगहों और नए मौकों के लिहाज से छूट देनी होती है। उनके समूहों का भी अपना ढाँचा होता है जो एक किस्म की स्थिरता और पारदर्शिता को सुनिश्चित करता है। यह ढाँचा लड़कियों की नई पीढ़ी को अपने हिसाब से समूह में शामिल होने और बाहर निकलने का मौका उपलब्ध कराता है। इसका लचीलापन ही लड़कियों को ज़रूरत के समय समूह की मदद लेने की गुंजाइश रखता है।

आखिरकार एक सहमी हुई बालवधू या स्कूल में हर चीज़ में अव्वल रहनेवाली लड़की – इन दो छोरों के परे लड़कियाँ कुछ और भी बन सकती हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने जो चौंकानेवाले आँकड़े पेश किए हैं और उस वजह से लड़कियों के भविष्य को लेकर जो अति उत्साह है, बढ़ी हुई दिलचस्पी है, वे लड़कियों का वर्तमान तय नहीं कर सकते हैं। मुमकिन है कि वे लड़कियों की निजी ज़िंदगी में जो बदलाव लाने की कोशिश कर रहे हैं, वे अधिक सुरक्षित, बेहतर और लड़की की भूमिकाओं में उनको ढालनेवाले हों, मगर बदलाव हमेशा

एक तरह से और एक दिशा में नहीं होता है। न ही हम बदलाव की दिशा का अंदाजा लगा सकते हैं और न ही यह ज़रूरी है कि समय गुजरने के साथ बदलाव की गति बरकरार रहेगी।

लड़कियाँ अपनी ज़िंदगी में क्या चाहती हैं या वे क्या बन सकती हैं या क्या कर सकती हैं, इसको लेकर क्या क्या नया खाका हो सकता है और उसके मौके क्या हो सकते हैं और वे जगहें क्या हो सकती हैं – समूह ये सब मुहैया कराते हैं। पलटकर देखने, आगे बढ़ने और एक जगह टिकने के लिए भी समूहों की भूमिका है। हालाँकि अभी तक आँकड़ों ने इसकी पुष्टि नहीं की है, लेकिन हमारी पीढ़ियों के आर–पार के इतिहास में लड़कियों और औरतों के समूह की इस धारा की मौजूदगी और उनकी भूमिका से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

दिप्ता भोग और दिशा मल्लिक

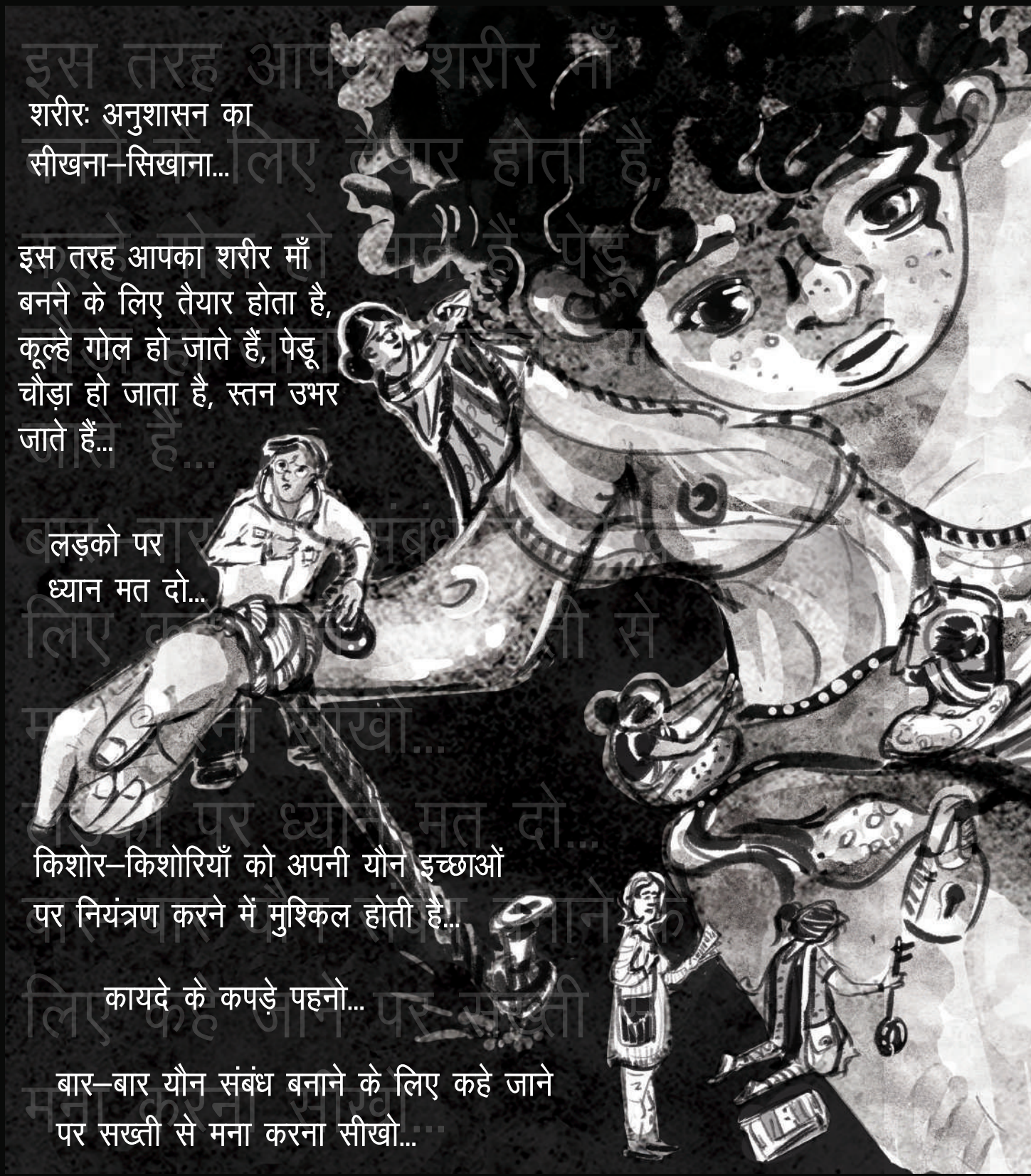

शरीरः अनुशासन का
सीखना–सिखाना...

इस तरह आपका शरीर माँ बनने के लिए तैयार होता है, कूल्हे गोल हो जाते हैं, पेड़ू चौड़ा हो जाता है, स्तन उभर जाते हैं...

लड़को पर
ध्यान मत दो...

किशोर–किशोरियाँ को अपनी यौन इच्छाओं पर नियंत्रण करने में मुश्किल होती है...

कायदे के कपड़े पहनो...

बार–बार यौन संबंध बनाने के लिए कहे जाने पर सख्ती से मना करना सीखो...

शरीर का स्कूलीकरण

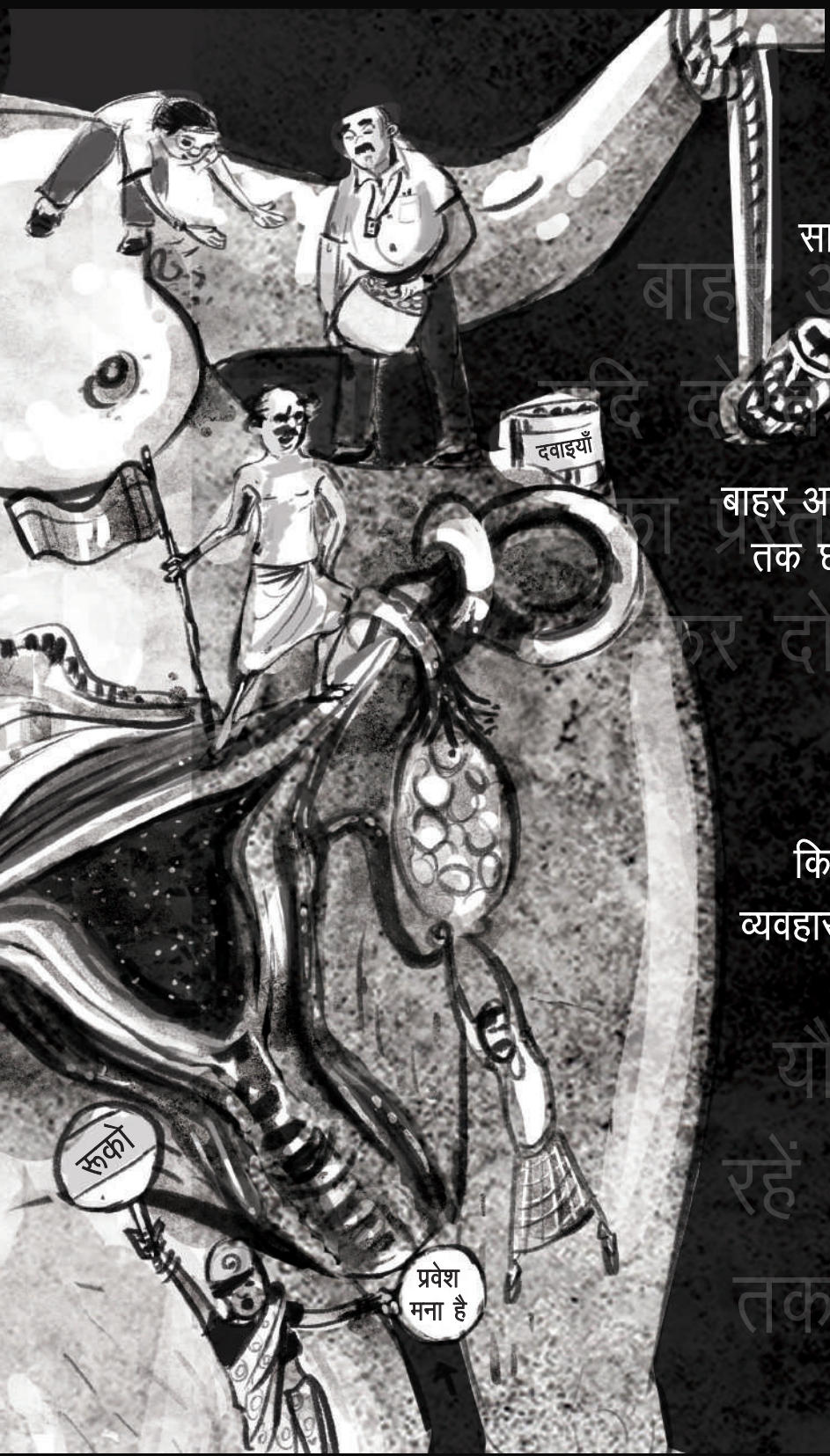

सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक मानदंड और नैतिक मूल्य...

बाहर अकेले मत जाओ यदि दोस्त घर तक छोड़ने का प्रस्ताव दें तो इन्कार कर दो प्रलोभन में मत आओ...

किशोर–किशोरियों का विपथगामी व्यवहार जब वे केवल शारीरिक संबंध में संतुष्टि खोजते हैं...

यौन संबंधों से दूर रहें कम से कम तब तक जब तक शादी न हो...

1 उर्मिला मतोंडकर बनने का ख्वाब
(लेकिन ख्वाब और भी हैं)

चित्रांकन : एकरूप संधू

आज के उत्तर भारत का कस्बा। कम उम्र में शादी और स्मार्ट फोन पर चलनेवाले प्रेम प्रसंगों की उलझी हुई दुनिया। उसमें जेंडर और यौनिकता के मुद्दे पर लड़कियों, औरतों और पूरे समुदाय के साथ काम करनेवाले कार्यकर्ताओं की मौजूदगी। उनकी मौजूदगी ने लड़कियाँ क्या कर सकती हैं, क्या नहीं, इसके ज़रिए लड़कीपन के पूरे खयाल को चुनौती देने का रास्ता खोल दिया है।

दो दशक पहले यह इलाका जैसा रहा होगा, अब उससे एकदम अलग नज़र आता है। वहाँ कार्यकर्ताओं ने हिंसा और श्रम जैसे अनेक मुद्दों के इर्द–गिर्द ग्रामीण औरतों को गोलबंद करने की मशक्कत की है। दुनिया को देखने के अलग अलग नज़रिए हैं जो एक–दूसरे पर हावी भी होते रहते हैं। नारीवादी कार्यकर्ताओं ने अपने दायरे से आगे बढ़कर काम किया। उन्होंने लड़कियों को मौके मुहैया कराए, सवाल करने की हिम्मत दी और जेंडर के दमनकारी कायदों को चुनौती देने की सलाहियत दी। माँ–बाप, समुदाय के लोग और यहाँ तक कि हमउम्र लड़कों के लिए भी लड़कियों के सर उठाने का मतलब होता है उनको चुनौती देना। लड़कियों की खुदमुख्तारी से उन सबकी अपनी चिर–परिचित पहचान और सत्ता भी डोल जाती है। खुद लड़कियों की दुनिया को देखें तो उनमें से हरेक लड़की एक–दूसरे से अलग है और हर लड़की अपने तरीके से मौकों का इस्तेमाल करने के लिए और अपने हिस्से की आज़ादी को लेकर मोल–तोल करती नज़र आती है, जूझती दिखाई पड़ती है। लड़कियाँ कहाँ तक और किसके सपने देख सकती हैं, इसमें भी उनकी अपनी इच्छाएँ अपने रिश्तेदारों और हमउम्र साथियों की इच्छाओं से गुँथी रहती हैं।

इस पूरे परिदृश्य में लड़कियों के जीवन में खेल एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में उभरकर आता है। उसने हमें लड़कियों के बाहर आने–जाने और कौन सी जगह वे जाएँगी, इसको लेकर जो पाबंदियाँ हैं, उनके शरीर और मन पर जो नियंत्रण है, उनकी इच्छाओं पर जो अंकुश है, उनके बारे में सोचने के लिए मजबूर किया। हमारे समाज में हमेशा आधुनिक और पारंपरिक, कायदों का पालन करने और उनको पलट देने के बीच टकराहट होती रहती है। ज़ोर इस पर रहता है कि दोनों के बीच 'उचित' संतुलन बैठाया जाए। जब इस 'उचित' संतुलन के विचार को लड़कियों की अपनी इच्छाओं से चुनौती मिलती है तब क्या होता है, यह हमारे सामने है।

उत्तर प्रदेश के एक कस्बे करौली में स्मिता अपने पैर जमाने की कोशिश में–
क्या मुझे एक ग्लास पानी मिल सकता है ?
यहाँ
तुम्हारा नाम क्या है ?
हिना
तुमको बीड़ी पीनी चाहिए। इसमें न जाने क्या भरा हुआ है!
क्या तुमको फुरसत है? घूमने चलना चाहोगी?
कहाँ?

कहीं भी। कहीं पर भी जहाँ लड़कियाँ जाती हैं।
तुम कमाल की हो। साफ लग रहा है कि तुमको करने को कुछ नहीं है।
वैसे तो यह सच नहीं है...
एकदम ठीक। मुझको देखो। केवल एक बुंदेलखंडी दबंग ही ऐसे कर सकता है। तुमको समझ में आ रहा है? एकदम ठीक।
केवल 'उड़ता पंजाब' नहीं, उड़ता यूपी भी! यह सब एकदम झूठ है।
यूपी तो उड़ता है ठान लेने से!
ENGLISH CLASS ONLY AT
MARI OM TRADERS
15

तीन हफ्ते बाद ...
हिना, बताओ कि मैं क्या करूँ कि तुम सब लड़कियाँ एक जगह आओ?
नहीं पता। हमलोग के लिए आफत मत खड़ी करो। कम से कम अभी तक स्कूल जा रही हूँ।
मैं ऐसा क्यों करूँगी? सिर्फ गप्प करने के लिए हमलोग मिलें? कोई एजेंडा नहीं। तुम और तुम्हारी सहेली लोग केवल।
दोस्ती केवल स्कूल तक के लिए है। और बात करना खतरनाक है। तुमको नहीं मालूम है क्या?
हाहा, अपनी दीदी की बात दोहराना छोड़ो।
अपनी माँ की बात दोहराना छोड़ो।
उसी दिन बाद में ...
मैं घर पर लड़कर आई हूँ। हिना के कारण ही आई। हमलोग क्या करने वाले हैं?
मुझको एक घंटे में घर लौटना होगा। खाना बनाना है।
हाँ, बैठो तो...हमलोग माहवारी और बच्चा पैदा करने की क्षमता पर बात...
क्या तुम सबको यही करना है?
कबड्डी कबड्डी कबड्डी कबड्डी

नहीं। असल में तो हमलोग वो खेल खेलना चाहते हैं।

तुमको पता है न कि हममें से कोई भी बड़े मैदान नहीं गया है। हम उससे भी आगे जा सकते हैं।

सचमुच! हमलोग उससे आगे भी जा सकते हैं। तुम सुनोगी? मानोगी?

अगले दिन करौली के फुटबाल कोच के साथ

....हफ्ते में तीन दिन होगा ...लड़कियों को केवल बेसिक ट्रेनिंग चाहिए...गोल...पेनाल्टी...

हाँ, तो ठीक है। एक महीने के लिए हफ्ते में तीन बार! यह किशोरियों के सशक्तीकरण...

अरे...मैडम के लिए कम से कम ठंडा तो लाओ....बेवकूफ कहीं का

अच्छा तो सुधा सौरभ में ठहरी हो न? कमरा आरामदेह है न?

क्या अकेली हो वहाँ?

महिला शौचालय

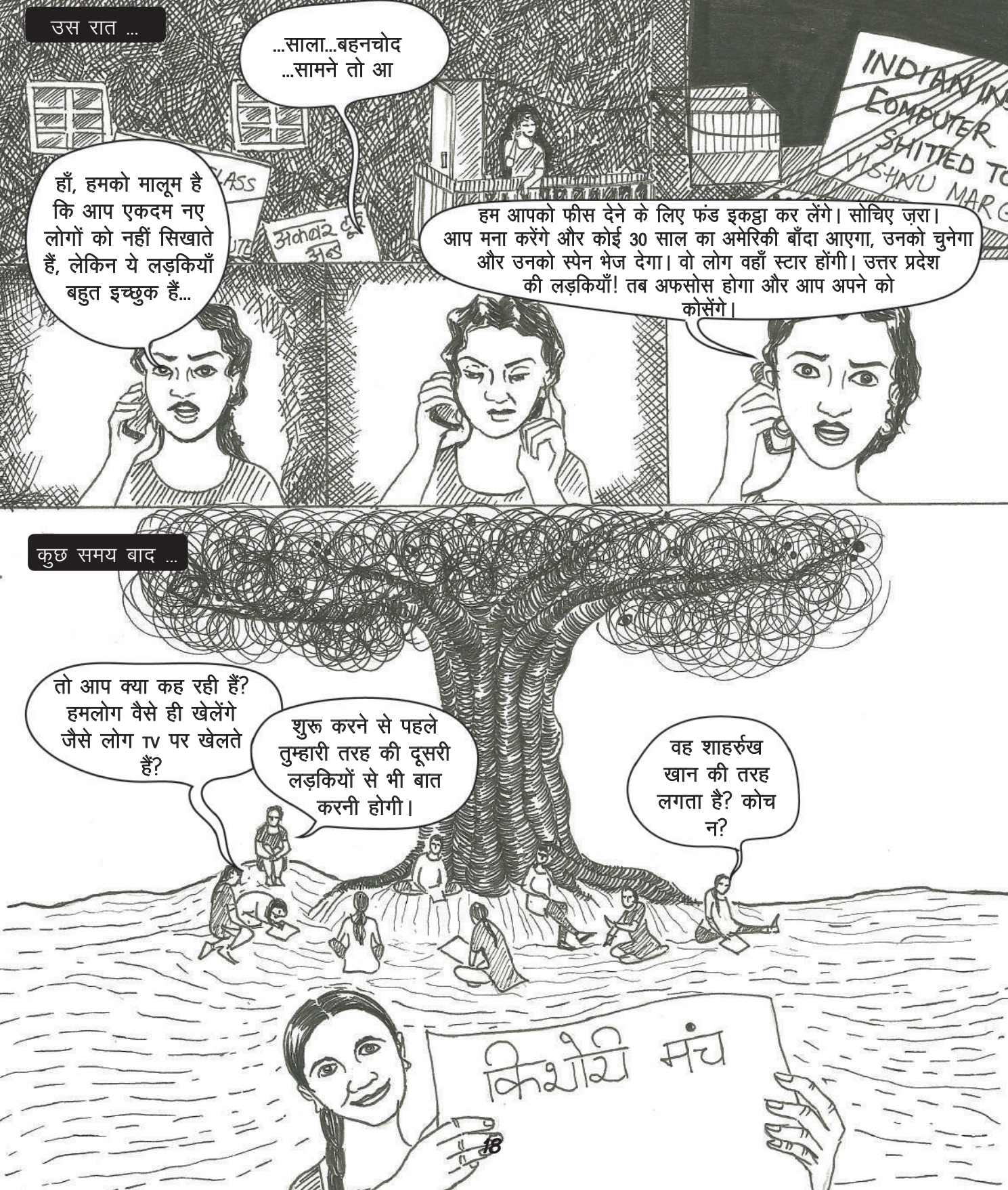
उस रात ...
...साला...बहनचोद ...सामने तो आ
हाँ, हमको मालूम है कि आप एकदम नए लोगों को नहीं सिखाते हैं, लेकिन ये लड़कियाँ बहुत इच्छुक हैं...
हम आपको फीस देने के लिए फंड इकट्ठा कर लेंगे। सोचिए ज़रा। आप मना करेंगे और कोई 30 साल का अमेरिकी बाँदा आएगा, उनको चुनेगा और उनको स्पेन भेज देगा। वो लोग वहाँ स्टार होंगी। उत्तर प्रदेश की लड़कियाँ! तब अफसोस होगा और आप अपने को कोसेंगे।
कुछ समय बाद ...
तो आप क्या कह रही हैं? हमलोग वैसे ही खेलेंगे जैसे लोग TV पर खेलते हैं?
शुरू करने से पहले तुम्हारी तरह की दूसरी लड़कियों से भी बात करनी होगी।
वह शाहरुख खान की तरह लगता है? कोच न?
किशोरी मंच
18

अगले कुछ हफ्तों में किशोरी मंच में जमकर धमाल हुआ।

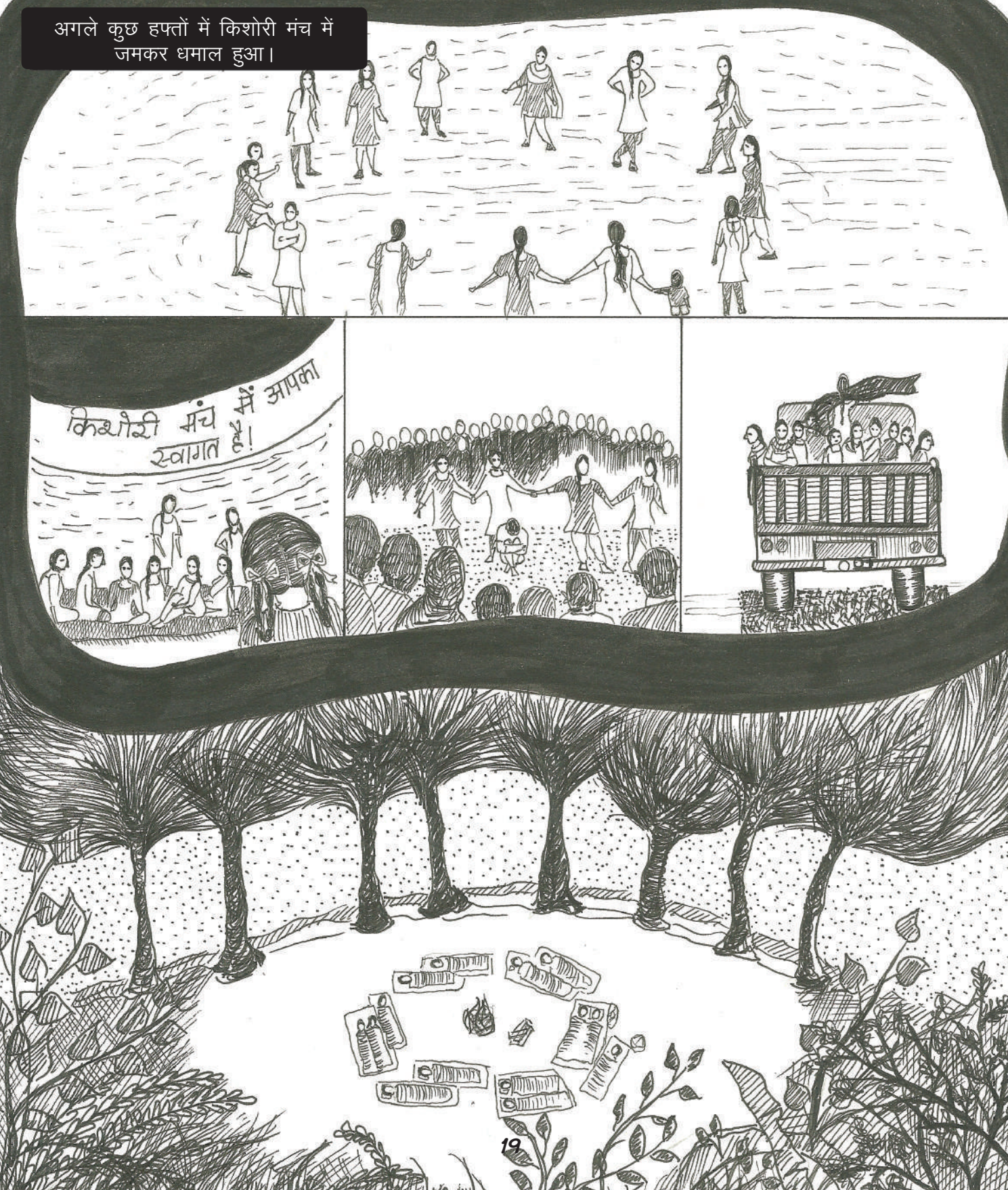

मुझको नहीं मालूम था कि मुझको ऐसा भी लग सकता है। क्या कहते हैं उसको?
बुद्धू? क्या तुमको बुद्धू की तरह लग रहा है?
श श श...चुप। अब इस पल को बर्बाद मत करो।
5 दिन से मैं घर नहीं गई हूँ। मुझको लगता है कि जब मैं घर लौटूँगी तो मैं वही नहीं रहूँगी जो अब तक थी।
नहीं, सचमुच नहीं। तुम अब कंगना रानौत बन गई हो।
बड़ा अजीब सा अहसास है। जब लगे कि आप सामान्य इन्सान हैं तो बड़ा अजीब लगता है। इसके पहले मैंने कभी सामान्य महसूस नहीं किया।
तुम अनोखी हो !
तुम साधारण नहीं हो
फुटबाल! मैंने इसकी कल्पना नहीं की थी कि इन लड़कियों के साथ मैं यह करूँगी।

हमलोगों को आधा मैदान चाहिए।
जब तुमलोग खेलोगे हमलोग नहीं खेलेंगे?... पहले या बाद में
तुम लड़की लोग बड़ी मज़ेदार हो!
शाम में 4 से 5 बजे
ठीक है। देखना अपने दुपट्टे में मत उलझ जाना और जब किक मारना सीख जाओगी तब हमारी तरफ किक मत मारना।
क्या मतलब? हमलोग क्या पहनेंगे?
खैर, TV पर मैंने उन्हें ट्रैक पैंट...
शलवार–कुर्ता और दुपट्टा ही तो पहनेंगे!
लेकिन दुपट्टा सरक जाएगा और मैं उलझकर गिर जाऊँगी और हर कोई हँसने लगेगा।
नहीं गिरोगी। कुछ नहीं होगा। सोचो कि तुम्हारे सिर पर घड़ा है और बाँह में छोटा भाई है। भला कैसे गिरेगा दुपट्टा!

हमलोगों को फुटबाल नहीं खेलना है।
तो क्या हुआ? हर किसी को मालूम है कि तुमलोग को छाती है।
हाँ यार, बहुत मुश्किल है। शायद लड़का लोग ठीक ही बोलता है। लड़कियों को नहीं खेलना चाहिए।
यह मुश्किल नहीं है! तुमने दौड़ने की कोशिश की है, तुमने इनको हिलते–डुलते देखा है?
बेवकूफी मत करो। अरे इसका क्या मतलब? तो क्या मैं सबको दिखाती फिरूँ?
मैं शर्मा नहीं रही हूँ। मुझको बस भागना नहीं है। मुझे...
कल ही तो हर कोई चाहती थी कि उसकी छाती उर्मिला मतोंडकर की तरह हो। दोनों बात कैसे होगी? तुम चाहो भी और शर्माओ भी।
थकान?
नहीं, घूरना अजीब लगता है
22

कुछ महीनों बाद

तुमको पता है उसने मेरी साइकिल पंचर कर दी ताकि मैं यहाँ न आ सकूँ?
हाँ, उसने मेरी भी... सबने मिलकर किया है
खैर, मैंने तो उसकी साइकिल उठाकर तालाब में फेंक दी। इसलिए हो सकता है कि मुझे तुम्हारे घर पर रुकना पड़े। ठीक है ?

दूसरी दुनिया दूसरे सवाल
मुझे शादी करने का मन है। शांति तुम्हें भी मन है न ?
करनी है, पर अभी जल्दी नहीं क्या?
सरिता की शादी में देखा था कैसे हर कोई उसी को देख रहा था।
रेखा, जब तुम खेलती हो तब भी हर कोई तुमको देखता है। देखता है ना? बोलो।
हाँ, लेकिन लाल रंग सचमुच मुझपर फबता है।
मेरा पति वरुण धवन की तरह नटखट होगा।
ज़मीन पर रहो। तुम्हारा दूल्हा तो मैकेनिक होगा, लेकिन तुम क्या होगी?
मुझे फर्क नहीं पड़ता कि वह क्या है। वह केवल मुझसे मोहब्बत करे।
कुछ दिनों बाद शांति के घर में...
मैं पढ़ाई खत्म करना चाहती हूँ और कुछ नहीं चाहती ... जब मुझको लगेगा कि मैं तैयार हूँ तब मैं तुमसे शादी करूँगी।
तुमको जितना समय चाहिए तुम लो...
क्या तुम फुटबाल खेलना जारी रखोगी ?
...

शांति, तुमको इसका अहसास है कि तुम कितनी खुशकिस्मत हो! वो लड़का तुमसे शादी करना चाहता है, उसकी स्कूल की पढ़ाई खत्म हो गई है और तुम इन सब का मटियामेट कर रही हो।
नहीं रेखा ... कुछ और चाहिए मुझको
तुमको अंदाजा नहीं है कि कितना मुश्किल हो सकता है सब कुछ। बोलो अंदाजा है?
मुझको है। हम सबको अंदाजा है.... अपने बाप से भागने का रास्ता शादी नहीं है।
लेकिन वो पीना कभी नहीं छोड़ेंगे, मैं जानती हूँ।
हम कुल 11 लोग हैं। हमलोग मिलकर कुछ तो कर सकते हैं।

करौली के बाज़ार में

हरामजादी, तेरा दिमाग खराब हो गया है क्या? तू यहाँ आई है? ठेके पर? क्या हो गया है तुझको? मैं तेरी टाँगें तोड़ दूँगा।

उससे पहले हम तुम्हारी यह बुरी आदत खत्म करेंगे।

छः महीने बाद ...

आज मेरे पापा आ रहे हैं। वे बोले कि मैं भी देखना चाहता हूँ कि ये लड़कियाँ क्या कर सकती हैं।

लेकिन तुमको लगता है कि शांति आएगी ?

वो कितनी सुंदर लग रही थी। मुझको मालूम है कि दुल्हन से सुंदर कोई नहीं लग सकता।

ओह, तुमदोनों चुप करो...दुल्हन से भी ज़्यादा खूबसूरत कोई है...दूल्हे की घोड़ी। तुम उसी की तरह बोल रही हो...वैसी लग भी रही हो।

तुम आ गई?

क्यों नहीं आऊँगी मैं? हमलोगों को आज मैच खेलना है न।

चलो चलें।
किस चीज़ का
इंतज़ार है ?

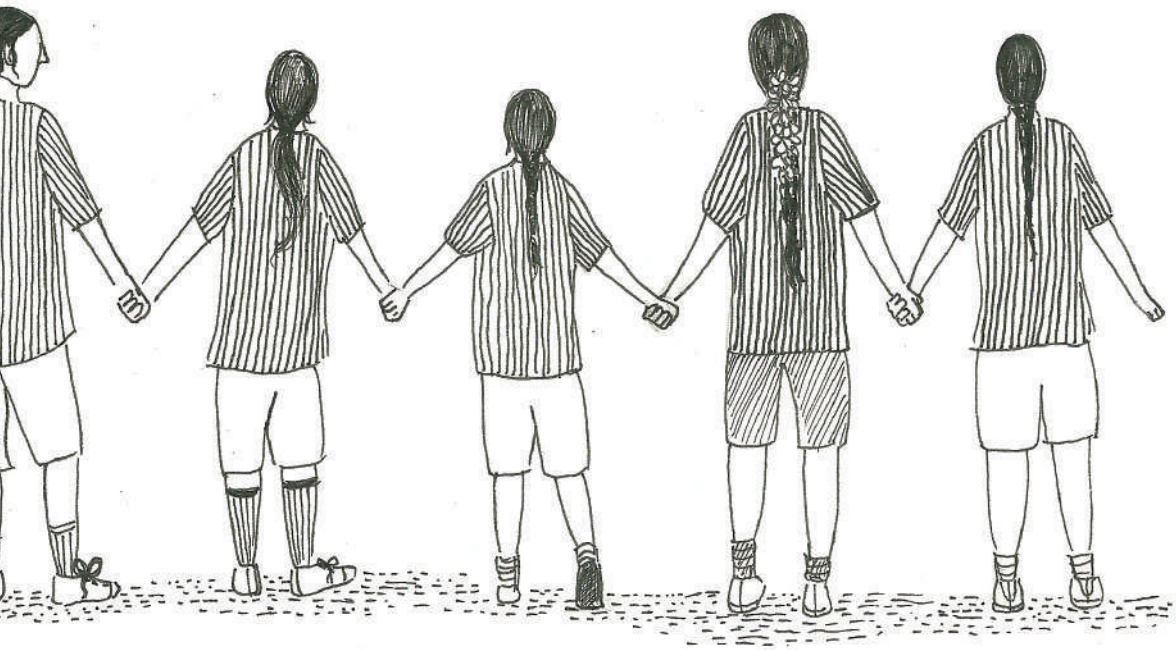

बालों की जाँच
दो बूँद डालो ताकि कम से कम निवेश करने की ज़रूरत हो
जहाँ सारे अंगों को जोड़ा जाता है
प्रजनन इकाई
ज्वलनशील पदार्थ
सावधान
आज्ञाकारी
कम लागत (देखभाल का कम खर्चा)
नजाकत से इस्तेमाल करें

लड़कियों का उत्पादन

आर्थिक इकाई
बीस इकाई जोड़ो ताकि उत्पादक भविष्य बने
शिक्षा इकाई
सस्ती कीमतवाली नई किस्म
नाखून जाँच
फैक्ट्री का बेकार माल
शादीशुदा
बहुत बलम करती है
कामुक स्वच्छन्द
खराब सामान
खराब सामान

2 गुलाब चेली संघ का सच्चा इतिहास

चित्रांकन : शमिता चटर्जी

तेलंगाना का ग्रामीण इलाका। नब्बे के दशक के बीच का दौर। जीवन बड़ा कठिन है, खासकर दलित परिवारों के लिए। जीवन और कमाई का साधन पसीने की बूँदों से, इंडोसल्फिन की महक से और नए ज़माने के ठेकेदारों से रचा है। बहुत सी महिलाओं और उनके परिवारों ने तेलंगाना के कपास के खेतों में दशकों तक ठेके पर मज़दूरी की है।

दमनकारी परिस्थितियों के बावजूद बदलाव अपना रास्ता ढूँढ़ ही लेता है। अभी हाल में ही दलित महिलाओं ने एक संगठन बनाया है – कई गाँवों की महिलाओं का संगठन। वे एक जगह इकट्ठा हुईं, मिलीं, उन्होंने बातचीत की और यौन हिंसा से लेकर पढ़ाई–लिखाई और श्रम के अधिकारों के मुद्दों तक को उठाया। युवा महिलाओं की एक पूरी नई पीढ़ी के जीवन में इस महिला संगठन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन जवान लड़कियों का जीवन दोस्ती और सपनों की दुनिया के बीच ही परवान चढ़ा। उसमें पुरानी पीढ़ी के किस्सों के समानांतर नए किस्से बने और वे किस्से उन पुरानी पीढ़ी के किस्सों से आश्चर्यजनक ढंग से अलग थे।

तेलंगाना में कपास का खेत, परागण का समय है।

चेची, तुमको घर जाना चाहिए। चिंता मत करो। मैं तुम्हारी अम्मां से बात करूँगी। वो तुमको अब्बा के पैर दबाने के लिए नहीं बोलेंगी।
उससे अच्छा है कि मैं यहीं रहूँ। मुझे अब्बा का पैर नहीं दबाना...
ENDOSULFAN
ENDOSULFAN
मुझको मालूम है। मैं तुम्हारी अम्मां से बोलूँगी।
नहीं, तुमको नहीं दबाना पड़ेगा।
तुमको उससे डर लगता है क्योंकि तुम इतनी बड़ी हो गई हो और कोई तुमसे शादी नहीं करेगा।
छोड़ो, मुझको अकेले छोड़ दो।

उस इलाके में माहवारी को लेकर एक भ्रांति प्रचलित है – जिस लड़की को माहवारी शुरू हो जाती है यदि वह कपास के खेत में जाती है और परागण के समय पौधों को छूती है तो उस मौसम में कपास की पूरी खेती खत्म हो जाएगी। उसमें बिनौले नहीं आएँगे। इसलिए ठेकेदार इस बात पर ज़ोर देते हैं कि कपास के खेतों में काम करनेवाली लड़कियाँ कम उम्र की होनी चाहिए। संभव है कि इस मान्यता के पीछे यह कारण हो कि कपास के पौधे छोटे होते हैं। उस वजह से छोटी उम्र की लड़कियों के छोटे और कोमल हाथ कपास के बिनौले तोड़ने के लिए ज़्यादा अच्छे माने जाते हैं और इस बहाने ठेकेदारों को उनका सस्ता श्रम मिल जाता है।

मुझे हर रोज़ ऐसा क्यों लगता है? क्या मैं मरनेवाली हूँ?

पागल हो! तुम मर नहीं रही हो। अभी तो 8 साल की ही हो। जब तुम थोड़ी और बड़ी हो जाओगी तो यह उतना बुरा नहीं लगेगा, बेहतर लगेगा।

तुम्हें याद भी है कि तुम जब 8 साल की थी तो...

मुझसे ज़्यादा होशियारी मत करो।

हमलोग लंबा रास्ता ले रहे हैं। चलो बस–ट्रक से बचकर चलें।

मैं चल नहीं सकती। सच कह रही हूँ। अक्का, तुमको मुझे गोद में उठाना पड़ेगा।

ठीक है। थोड़ा सुस्ता लो... हाँ

चलो महिला संगठन की मीटिंग में चलते हैं। वहाँ पर लक्ष्मी अक्का होगी।

मुझे लगा था कि पिछली बार उन लोगों ने तुमको निकाल दिया था।

हाँ, इस बार तुम मेरे साथ हो।

हमलोग भी आ रही हैं।

बेटी भाग गई है, लेकिन वह इसको पीट रहा है...
लेकिन उसको बोलना पड़ेगा कि अब बहुत हो चुका...अब और नहीं
वो कहेगी, लेकिन तभी न जब उसको खुद इतनी शर्म नहीं आ रही होगी
तुम लड़की लोग ठीक हो? खैरियत है न? क्या कुछ हुआ है?
इसको अच्छा नहीं लग रहा है। हमलोग 12 घंटे तक कपास के खेत में थीं।
आज मज़दूरी मिलनेवाली थी न? क्या तुम लड़कियों को पैसा मिला?
नहीं, पिछले 2 हफ्तों से हमें मज़दूरी नहीं मिली है।
अच्छा, एक उसके चलते जो इतनी बनी–ठनी है ...
हाँ, तुम्हारा बेटा मेरे लिए यह कपड़ा लाया है। कोई दिक्कत है?
बदतमीज़! तेरी इतनी हिम्मत!

हटो, पीछे हटो और उसको छोड़ दो।
यदि तुमको बेहतर लग रहा है तो तुमको जाना चाहिए। हमलोग को अब अपनी चर्चा खत्म करनी है।
यदि आपको परेशानी नहीं हो तो हमलोग रुकना चाहेंगी।

हम भी आपको कुछ बताना चाहते हैं अगर आप सुनें तो।

मुझे बहुत खून निकल रहा है...एकदम खून से तरबतर हो गई हूँ।

हे भगवान! ये लड़कियाँ कितनी नौटंकीबाज हैं! शादी–ब्याह के बाद भला इनका क्या होगा?

शादी...शादी...बस यही एक बात! हमको कहने के लिए और भी बातें हैं।

अच्छा, एक खयाल सूझा है...

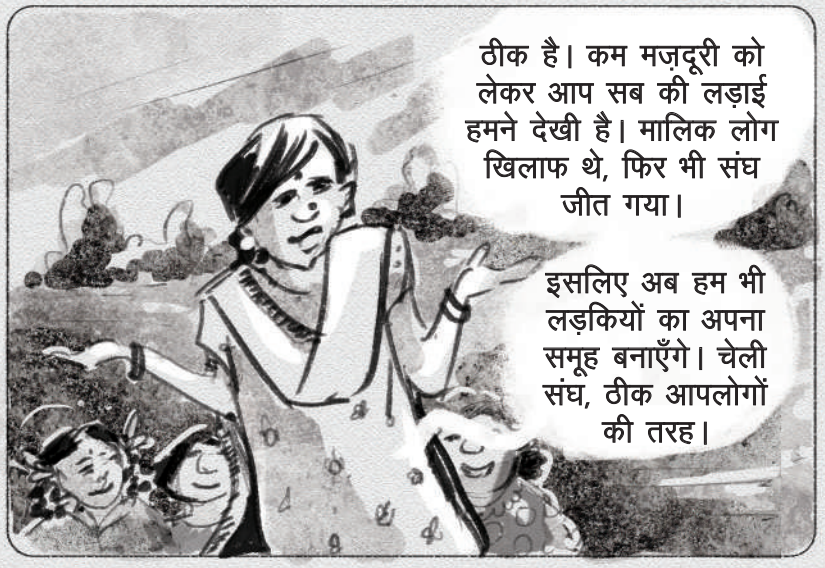
ठीक है। कम मज़दूरी को लेकर आप सब की लड़ाई हमने देखी है। मालिक लोग खिलाफ थे, फिर भी संघ जीत गया।
इसलिए अब हम भी लड़कियों का अपना समूह बनाएँगे। चेली संघ, ठीक आपलोगों की तरह।

!!!

भला क्यों?
हमलोग तुमलोगों की मदद के लिए हैं न!

समूह इसलिए कि हमलोगों को भी सीखना है कि हम आगे कैसे बढ़ें। हम लड़कियाँ हैं। हमारे सपने कुछ और हैं।
अरे वाह! तुमने कह दिया।

सावधान रहो बच्चू! हो सकता है कि मुँह माँगी चीज़ मिल जाए।

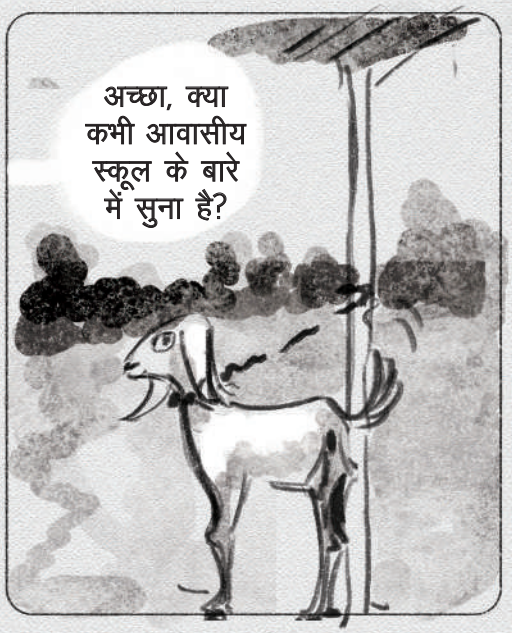
अच्छा, क्या कभी आवासीय स्कूल के बारे में सुना है?

महिला शिक्षण केंद्र आठ महीने का आवासीय केंद्र था। यह हाशिये पर डाल दिए गए समुदायों की लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा के लिए कारगर हस्तक्षेप था। यहाँ उन्होंने पढ़ना–लिखना सीखा, दुनिया के बारे में जाना और अपने अधिकारों को जाना।

8 महीने बाद आवासीय महिला शिक्षण केंद्र से लौटने के बाद...

खेत में इतना काम करो और ऊपर से खाना बनाओ !

केंद्र से आने के बाद मुझे भी दिन भर पिसते रहना अच्छा नहीं लगता।

कल वह ठेकेदार हमलोगों को इस हफ्ते की फिल्म दिखाने ले जाएगा...

कितना धोखेबाज़ है

हाँ। ज़रा हिसाब तो जोड़ो। 12 घंटे के काम के लिए दिहाड़ी का डेढ़ गुना होता है। मतलब 70 रुपया नहीं, 105 रुपया हो।

105 रुपए को 6 दिन के लिए 6 से गुणा करो। 630 रुपए होगा। वह हमलोगों को केवल 360 रुपए मज़दूरी देता है।

फिर भला हमलोग क्यों 12–12 घंटे खटते हैं ?

महिला संघ की अगली बैठक में

गुलाब चेली संघ की इन लड़कियों ने एक दिन में 8 घंटे से अधिक काम करने से साफ मना कर दिया है।

हम अपने अधिकार के लिए लड़ती हैं तो हमें उनके अधिकारों के लिए भी खड़ा होना होगा।

लेकिन ठेकेदार ने हमको एडवांस दे दिया है। अगर बेटियाँ नहीं जाएँगी तो हमें जाना पड़ेगा।

हर हफ्ते कपास के खेतों में काम करनेवाली लड़कियों को ठेकेदार फिल्म दिखाने ले जाता है। एक दिन रास्ते में...
तुम तो बाहुबली के बारे में ऐसे बोल रही हो जैसे वो तुम्हारा दोस्त हो।
मैंने नाना के फोन पर उसे देखा है। उसका किसी इंजीनियर से रिश्ता हुआ है।
मैंने सुना है कि प्रभा की सगाई हो गई है।
लेकिन क्या वो सुंदर है?
उसको तमन्ना से रिश्ता करना चाहिए था। है न? लेकिन उसने इंजीनियर को चुना।
मेरे हिसाब से अगर तुम इंजीनियर होती तो कोई भी तुमसे शादी कर लेता।
हाँ, मैं अगर इंजीनियर होती तो किसी नेता से शादी करती।
पता है उसके मुँह से बास आती है...
ओह!

कोंडम्मा ने क्या गलत किया था? कोंडम्मा की जान क्यों चली गई? क्यों नहीं हम सब यह सवाल उठाएं?
हमें जवाब चाहिए। जवाब दो। जवाब दो।
यदि तुमलोगों को जवाब चाहिए तो घर से बाहर निकलना होगा और तब जवाब मिलेगा। यदि चाहती हो कि तुमलोगों की आवाज़ सुनी जाए तो अपनी आवाज़ बुलंद करनी होगी।
हम अपनी आवाज़ बुलंद कर सकती हैं।
और यदि तुम कहती हो कि तुम हमसे अलग हो तो तुमको बताना होगा कि कैसे अलग हो।

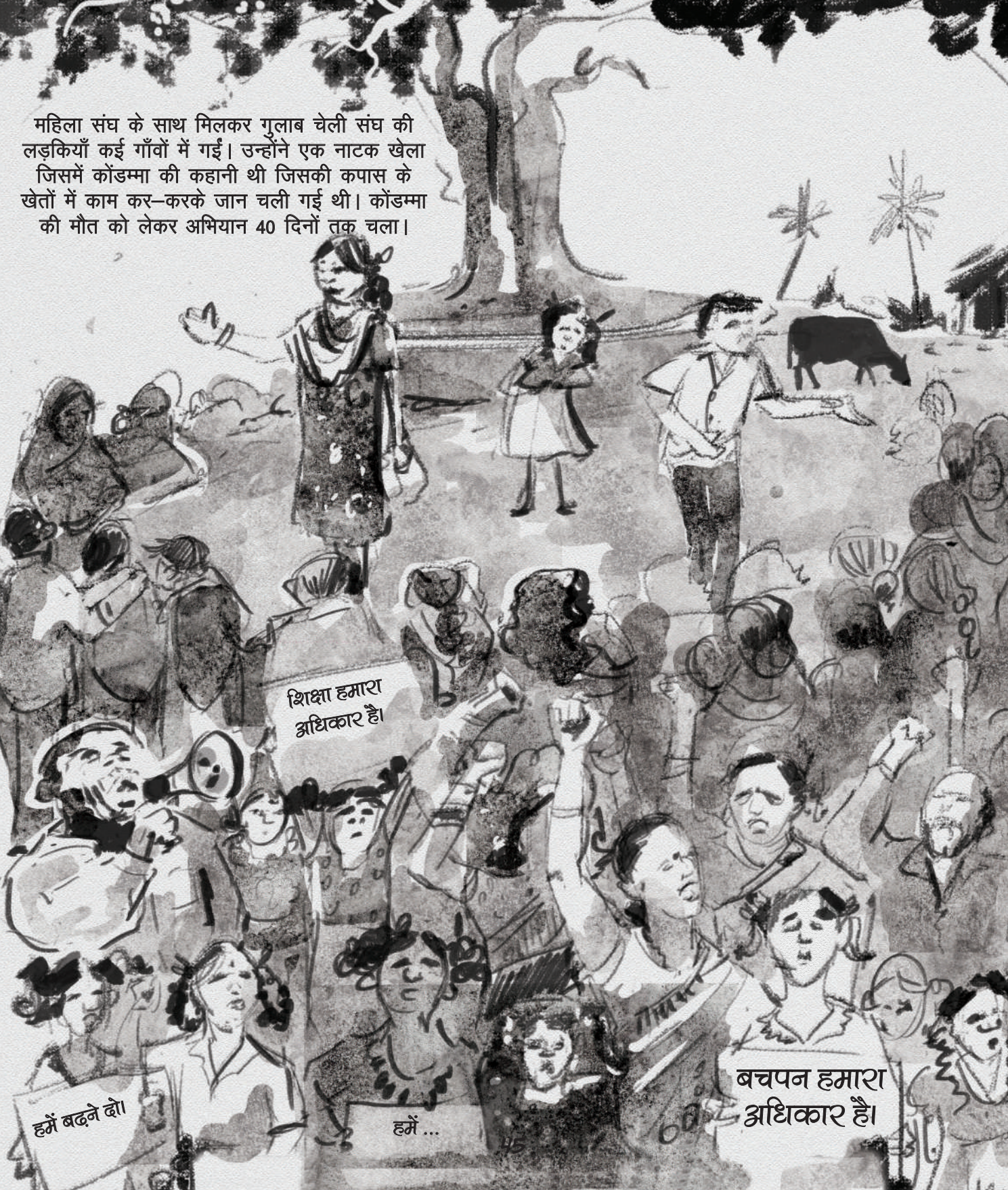
महिला संघ के साथ मिलकर गुलाब चेली संघ की लड़कियाँ कई गाँवों में गईं। उन्होंने एक नाटक खेला जिसमें कोंडम्मा की कहानी थी जिसकी कपास के खेतों में काम कर–करके जान चली गई थी। कोंडम्मा की मौत को लेकर अभियान 40 दिनों तक चला।
शिक्षा हमारा अधिकार है।
हमें बढ़ने दो।
हमें ...
बचपन हमारा अधिकार है।

अभियान के अंत में ज़िले के अधिकारियों और ठेकेदारों के साथ बैठक

हमने तुमलोगों पर काम करने के लिए ज़बरदस्ती कभी नहीं की। तुम ही आई थी काम माँगने...

बचपन हमारा अधिकार है।

हाँ, हमको मालूम है, लेकिन हमलोग यहाँ इसलिए नहीं हैं कि...

लड़कियों को पढ़ने दो, उनको बढ़ने दो

हमें पढ़ना है

लेकिन तुम लोगों ने पूरे इलाके में हमें बदनाम कर दिया है।

मुझको लगता है कि हमने जो कुछ भी कहा है उसका एक अक्षर भी तुमलोगों ने नहीं सुना है।

ठीक है, ध्यान से सुनो।

दो बातें हैं–

हमलोग दिन के 8 घंटे के बाद एक मिनट भी फालतू नहीं काम करेंगी।

केवल 8 घंटे काम के

केवल 14 साल से ऊपर ही

और लड़का हो या लड़की 14 साल से कम उम्र का कोई भी आपके खेतों में काम नहीं करेगा।

कोंडम्मा की कसम खाओ।

ठीक है! ठीक है! हम कोंडम्मा की कसम खाते हैं। उसकी आत्मा को शांति मिले।

तुमको पता है कि नाना क्या बोले? उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे हाथ मत लगाना।
वे एक आठ साल की लड़की से डरे हुए हैं।
नहीं, वे आठ साल की एक लड़की और लड़कियों के झुंड से डरे हुए हैं।
तुमने अपनी माँ को बताया क्या ?
मैंने बता दिया है। आवासीय स्कूल में दाखिला लिया है। अगले महीने छठी कक्षा में जाऊँगी। अम्मां ने कहा है कि वो मेरे लिए नया सूट सिल देगी।
वहाँ लड़के भी होंगे? यदि लड़के रहेंगे तो मैं भी आऊँगी।
तो मैंने तय किया है कि नेता से शादी करने की जगह मैं खुद नेता बनूँगी। काम भी कम होगा।
मुझसे कायदे से पेश आना। लड़कियो, देखना तुमलोगों को मेरी ज़रूरत पड़ेगी।
हम सबको एक–दूसरे की ज़रूरत पड़ेगी।

गुलाब चेली संघ की बैठक में
मेरे खयाल से शैला भागी नहीं, यह बहादुरी की बात है। समुदाय के लोगों से भिड़ने के लिए ज़्यादा हिम्मत चाहिए।
लेकिन भला उससे क्या होगा जब लड़के को ही हिम्मत नहीं है! तब क्या होगा जब लड़का उसको छोड़ देगा?
क्या दुनिया में उसके अलावा लड़का नहीं है?
तुम बुजुर्ग लोगों की तरह मत बोलो।
सब ठीक–ठाक है न? तुमलोगों को किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बोलो।
हमलोग सोच रहे थे कि क्या हम भी ...छोड़ो, मुझको नहीं मालूम।
बैठक में हमलोग आ सकते हैं क्या?
अच्छा... क्यों भई? इरादा क्या है?
न... न...
असल में हमने तुमलोगों का नुक्कड़ नाटक देखा और उसके बाद तुमलोगों की अधिकारियों के साथ बैठक भी देखी।
गजब का था सब। क्या कमाल किया है तुम लड़कियों ने! इससे हमलोगों को भी फायदा हुआ है।
ठेकेदार हमलोगों को भी दिन के 8 घंटे से अधिक काम करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता।
अरे शुक्रिया शुक्रिया... लेकिन अब तुमलोग चाहते क्या हो?

क्या चेली संघ में लड़के आ सकते हैं?
ऐसा पहले तो नहीं हुआ है? लेकिन इसपर बात की जा सकती है और इसपर सबकी राय ले लेंगे। वोटिंग हो जाएगी।
!!

?
जिनको लड़कों के चेली संघ में आने में ऐतराज नहीं है वे सब हाथ उठाएँ।

49

बस! यही दिन देखना बाकी रह गया था!
!
मैंने कहा था न कि हमलोग आपसे अलग हैं। हैं न?

में हौसा भाषा बोलनेवाली गरीब लड़कियों में से 97% लड़कियों को 2 साल से भी कम शिक्षा मिली है। दक्षिण एशिया में 20 से 24 साल की औरतों में से 49% की शादी 18 साल की उम्र से पहले हो जाती है। अफ्रीका के पश्चिमी और केन्द्रीय इलाके में साक्षरता दर 44% है। जबकि सबसे कम विकसित देशों में भी साक्षरता दर 88% है। मतलब प्रत्येक 100 युवा लड़कों के मुकाबले 88% युवा लड़कियाँ शिक्षित हैं। तुर्की में कुर्दिश भाषा बोलनेवाली गरीब घरों की लड़कियों में से 43% लड़कियों को 2 साल से भी
वह चिड़िया है कि हवाई जहाज?
नहीं, यह सुपर लड़की है।

ge ,d cMh leL;k dk f'kdkj g!

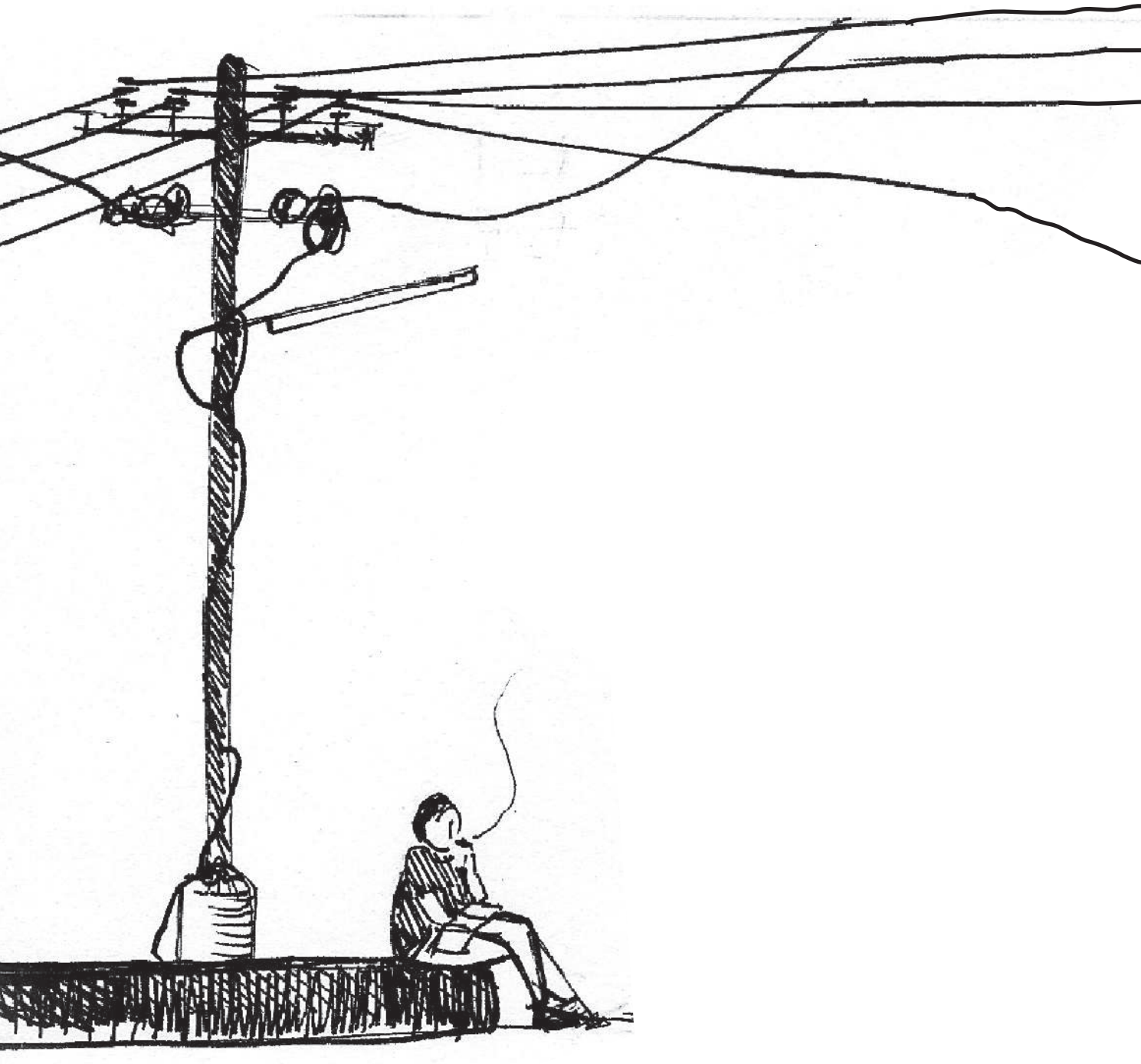

3 ब्यूटी, बेबो और उनकी दोस्तों ने लिया पंगा

चित्रांकन : एकरूप संधू

पूरब के एक शहर की घुमावदार गलियाँ जहाँ लोगों के कंधे एक–दूसरे से टकराते रहते हैं। और इन भीड़–भाड़ भरी गलियों के बीच यौनकर्मियों का एक समूह अपने काम में व्यस्त रहता है। क्या तुमको ऐसा नहीं लगता कि यह लड़कियों के लिए ढेर सारी रोमांचक कहानियों के एकदम लायक ठिकाना है ? नौजवान लड़कियाँ उन गलियों से गुज़रती हैं कभी कभी इस ठस्से से जैसे उनसे जान–पहचान हो, कभी बहादुरी दिखाते हुए उन्हें पार करती हैं और कभी उनकी तेज़ रफ्तार कदमों से अनहोनी की आशंका झलकती है। वे दोस्तियाँ गाँठती हैं, हँसती हैं, वे किताबें पढ़ती हैं जो उनको ठहराव देती हैं, वे लड़ती हैं।

वे नई जगहों का सपना देखती हैं। यह सब कुछ स्कूल की व्यर्थ–सी ज़िंदगी के साथ चलता है जहाँ फब्तियाँ कसी जाती हैं, खेल के मैदान में अपमानित किया जाता है, उनके व्यक्तित्व और उनकी क्षमताओं को नज़रअंदाज़ करके उनकी मलामत की जाती है।

उनकी रोज़ाना की ज़िंदगी ऐसी तस्वीर है जिसमें हर जगह माँ के काम की छाया दिखाई पड़ती है। कभी–कभी उनको मज़बूती प्रदान करते हुए तो कभी–कभी बड़ी होने की डगर इतनी थकानेवाली होती है कि आगे बढ़ना मुश्किल होता है। इन सबके बीच एक ऐसी जगह है जहाँ उस इलाके की कई पीढ़ियों की औरतें बात करने के लिए इकट्ठा होती हैं। वे सीखने के लिए, अपने साथ होनेवाले तरह तरह के अन्यायों से लड़ने के लिए गोलबंद करने के लिए जमा होती हैं। एक ऊँचा सा मकान जो एक अँधेरी कहानी के एक पात्र के समान मालूम होता है। यह अंधकार से रोशनी की तरफ ले जानेवाला पात्र नहीं है, बल्कि यह बताता है कि बड़ी होने के हरेक अनुभव में उजाला भरा क्षण है और उजाला भरा अंतराल है।

बेबी, 14 साल,
विद्यार्थी बनना चाहती है...

बेबो, 16 साल,
विद्यार्थी बनना छोड़ चुकी है

ब्यूटी, 15 साल
स्कूल में इतना टिकना चाहती है कि
विद्यार्थी होने का अहसास हो

क्वीन, 35 साल,
यौनकर्मियों के एक संगठन पल्लव
सेंटर की सदस्य, हमारी तीन पात्रों पर
बारीकी से निगाह रखनेवाली

बेबी, बेबो और ब्यूटी सब कोलकाता की यौनकर्मी महिलाओं की बेटियाँ हैं।

देखो वह रही!
कहाँ जाएगी वो ?
अंधे हरामज़ादे!

ब्यूटी से स्कूल में मुलाकात...
SENIOR SECONDARY SCHOOL
तुम पहले
नहीं, तुम पहले
अच्छा, साथ–साथ ...एक...दो
तीन...हा हा हा

चाय की दुकान पर बेबो से मुलाकात

तुम अंदर क्यों नहीं आती और वहीं क्यों पढ़ती हो?

नहीं, धन्यवाद। मैं ठीक हूँ।

तुमको पता है कि तुमको कहीं अंदर जाकर पढ़ाई करनी चाहिए! हर किसी को लगेगा कि...

और तुम अपने पौना के लिए दुगुना पैसा वसूल कर सकते हो। तुमको क्या दिक्कत है?

देख लो। एकदम अपनी माँ की बोली बोल रही हो।

गनीमत है कि मैं चायवाले की तरह नहीं बोलती हूँ...

और क्वीन शहर की ऊँची बहुमंजिली इमारत से उन तीनों को ताक रही है

दोपहर में बेबी

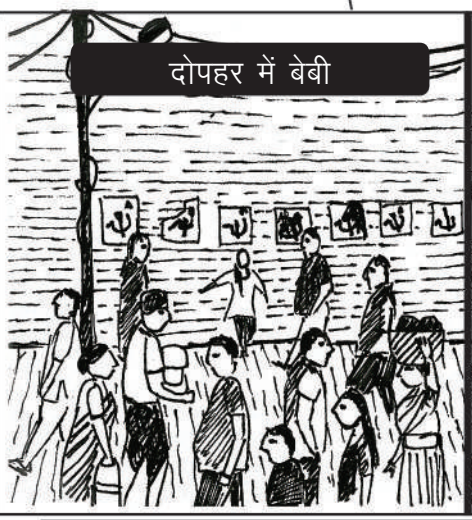

ब्यूटी, तुम अब शिकायत करना छोड़ दो। भला दोस्ती कैसे करोगी?
मैंने शिकायत नहीं की। मैंने तो केवल इतना पूछा कि क्या खाली घंटी में मैं मेडिकल रूम में जा सकती हूँ।
और तो कुछ नहीं... असल बात यह है कि तुम किसी चीज़ में मेहनत नहीं करना चाहती हो। तुमको इसका रत्ती भर अंदाजा नहीं है कि असली दुनिया में क्या कुछ होता है !
मैम, मैं गणित में पास हूँ ...
देखा न? तुम्हारा यही रवैया तुमको आगे बढ़ने नहीं देगा और तुम कभी अपनी माँ को उस फंदे से बाहर नहीं निकाल पाओगी... उस नरक की ज़िंदगी से...
तो अब कहाँ जाओगी?
किसी दूसरे स्कूल में।

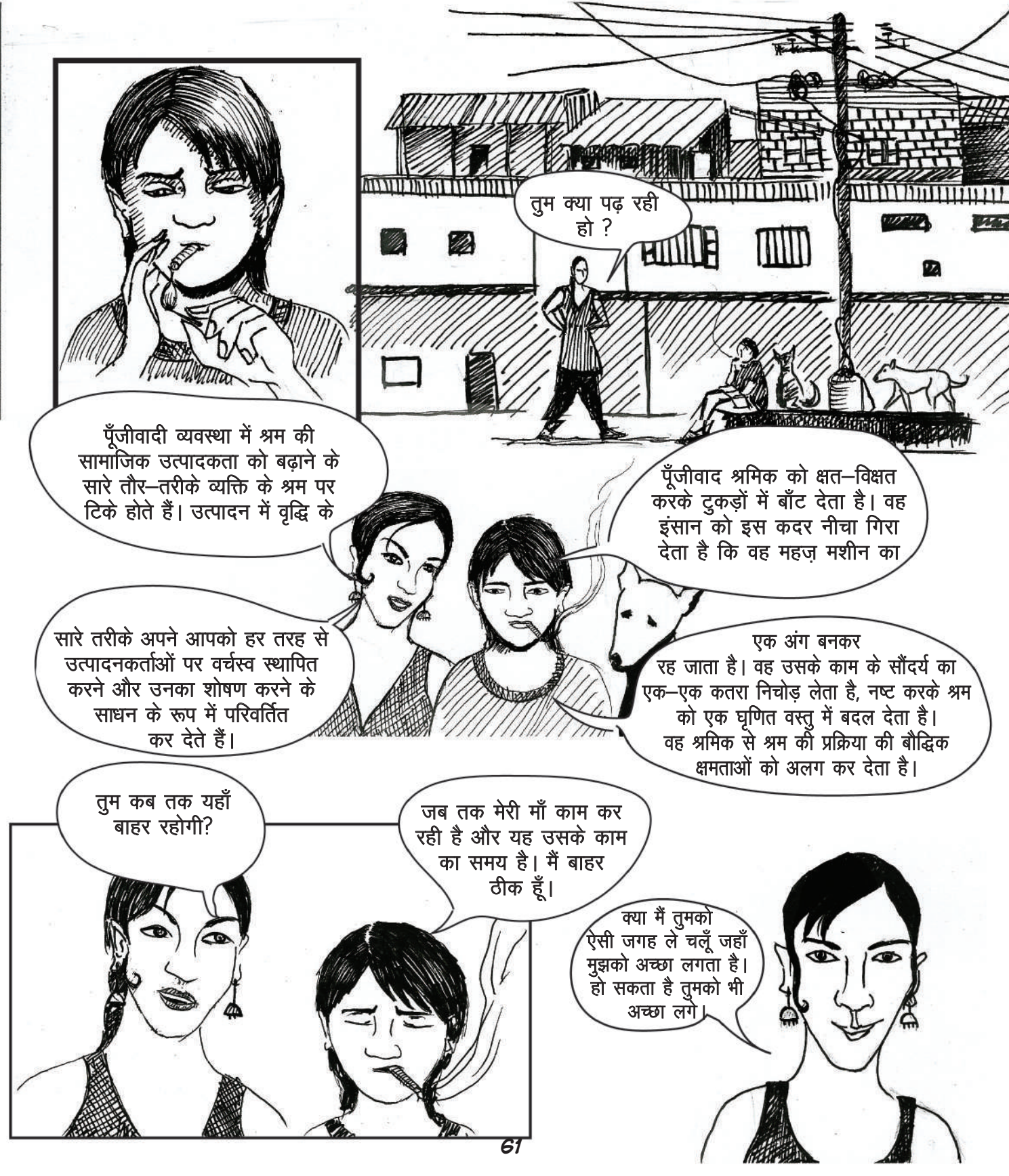
तुम क्या पढ़ रही हो ?
पूँजीवादी व्यवस्था में श्रम की सामाजिक उत्पादकता को बढ़ाने के सारे तौर–तरीके व्यक्ति के श्रम पर टिके होते हैं। उत्पादन में वृद्धि के
पूँजीवाद श्रमिक को क्षत–विक्षत करके टुकड़ों में बाँट देता है। वह इंसान को इस कदर नीचा गिरा देता है कि वह महज़ मशीन का
सारे तरीके अपने आपको हर तरह से उत्पादनकर्ताओं पर वर्चस्व स्थापित करने और उनका शोषण करने के साधन के रूप में परिवर्तित कर देते हैं।
एक अंग बनकर रह जाता है। वह उसके काम के सौंदर्य का एक–एक कतरा निचोड़ लेता है, नष्ट करके श्रम को एक घृणित वस्तु में बदल देता है। वह श्रमिक से श्रम की प्रक्रिया की बौद्धिक क्षमताओं को अलग कर देता है।
तुम कब तक यहाँ बाहर रहोगी?
जब तक मेरी माँ काम कर रही है और यह उसके काम का समय है। मैं बाहर ठीक हूँ।
क्या मैं तुमको ऐसी जगह ले चलूँ जहाँ मुझको अच्छा लगता है। हो सकता है तुमको भी अच्छा लगे।

यह कमरा ठीक है?
चलो दूसरी मंज़िल पर चलते हैं।
हा हा हा
तीसरी मंज़िल की ओर
दाँत निपोरना बंद करो। यह लगता तो गुब्बारे जैसा है, पर इसको कहते हैं कंडोम।
ब्यूटी, क्या लड़कों ने तुम्हारे साथ कुछ किया?
मेरे पुराने स्कूल में एकदम यह सत्र होना चाहिए था।

सेंटर

जेनेवा कहाँ है?
हमारे जेनेवा के कार्यक्रम के लिए दो लड़कियाँ कम पड़ रही हैं। क्या तुमलोगों में से कोई 20 दिन में नाच सीख सकती है?
बेबी नाच सकती है।
हाँ! इसीलिए मैं कभी स्कूल नहीं गई। तुमको मालूम है कि मैं कागज़ पर से बिना कलम उठाए लगातार दस पन्ने लिख सकती हूँ। अपने मन से...
दूसरी मंज़िल की ओर
अगर वे कर सकते थे तो वे करते। तुम जानती ही हो न कि लड़के कैसे होते हैं।
मुझे तो स्कूल जाना अच्छा लगता, लेकिन मैं स्कूल पहुँच ही नहीं पाई ...

कुछ हफ्तों बाद पल्लव सेंटर में घर जैसा अहसास
देखो यह शरीर की फोटो है। तुमको इसमें बताना है कि कौन सा अंग तुम्हारी किस भावना से जुड़ा है – डर, गर्व, आनंद और शर्म
मेरे लिए यह है डर

अब यह जगह है। तुम्हारी अपनी जगह। अभी और आगे के लिए...तुम जो भी बनना चाहती हो या जो कुछ करना चाहती हो वो तुम यहाँ तलाश सकती हो। यह जगह केवल तुम्हारी उम्र की लड़कियों के लिए है, तुम्हारी माँ लोगों के लिए नहीं। सिर्फ तुमलोगों के लिए।
कोई शर्त नहीं है, बस एक ही वादा करना है कि तुम सब मिलकर अपना रास्ता खोजोगी।

कुछ दिन बाद खबर मिलती है कि एक छोटी सी बच्ची इलाके में लाई गई है। इस बार क्वीन का अपना गैंग है।
ये लड़कियाँ एक युवा समूह से हैं और बेला उनकी दोस्त है। तुम्हें मालूम है कि यौनकर्मियों का यूनियन नाबालिग लड़कियों को यौनकर्म के पेशे में लाने के खिलाफ है। किसी को भी यहाँ अपनी मर्ज़ी के खिलाफ लाने की मनाही है। तुम्हारे खिलाफ अदालत में तस्करी का मामला दर्ज होगा। अब हटो मेरे रास्ते से
बेला?
मैं तुमको यहाँ से निकालकर ले जाने के लिए आई हूँ।
अरे हट हिंजड़े! तू मुझे क्या बताएगा कि मुझे क्या करना है!
वह तुमसे कहीं ज़्यादा मर्द है!
या औरत!
तुमने सुना नहीं कि उसने क्या कहा? हटो रास्ते से ...
66

ब्यूटी के साथ वापस नए स्कूल में
बच्चो, हमलोग ब्यूटी का स्वागत करते हैं। वह एक बहादुर लड़की है। देखो उसको। वह चाँदीपुर की गंदगी से निकलकर आज यहाँ तक पहुँची है। वह स्कूल में आकर अपनी ज़िंदगी सुधारना चाहती है।
मुझे पक्का विश्वास है कि प्रभु ईसु की कृपा से हम उसको उसकी माँ की ज़िंदगी से दूर रख पाएँगे।
?
मैम, मेहरबानी करके आप दुबारा मेरे घर को गंदा नहीं कहिएगा।
उस रात घर पर
क्या कल तुम वापस स्कूल जाओगी?
हाँ, जाऊँगी।

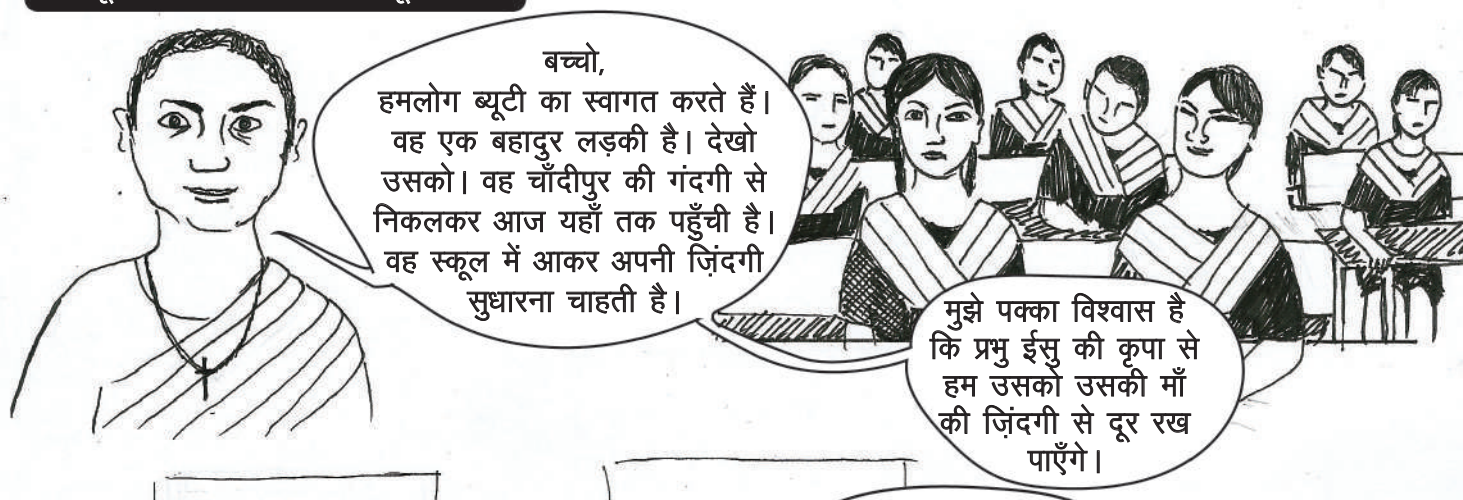

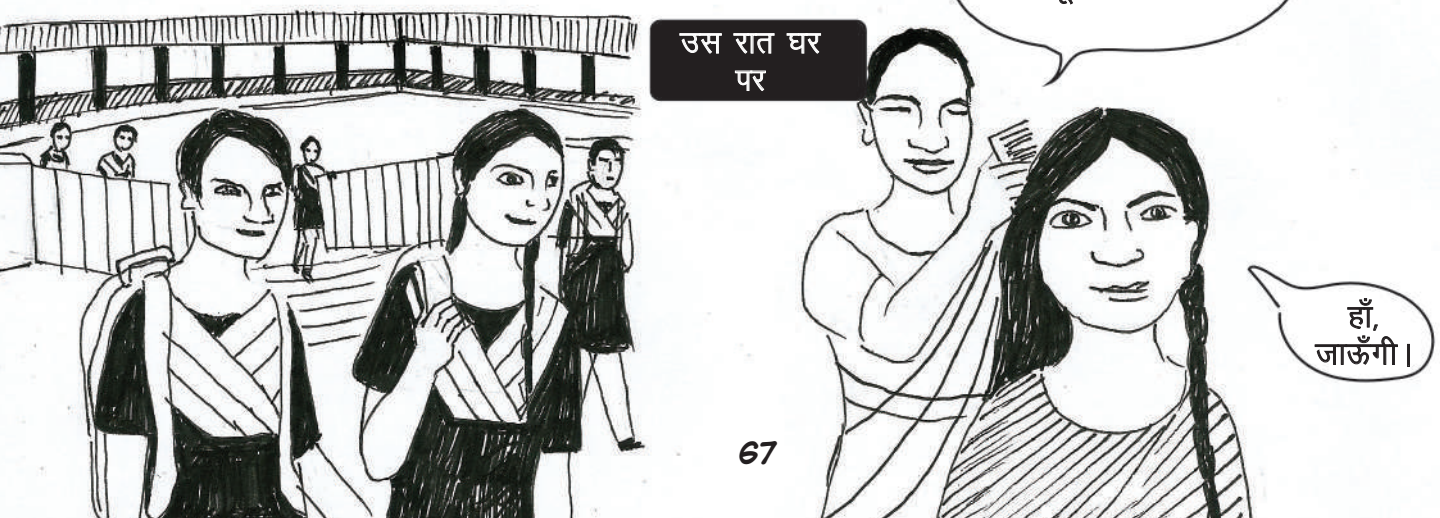

बेबी चाँदीपुर की गलियों में
बड़ी जल्दी जवान हो रही हो?
आह...
और भी जल्दी बड़ी होना है?
उनलोगों को बता दो कि तुम्हारी माँ कहाँ है!
अच्छा, तो तुम मेरे खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराओगी? बच्ची, किसने बताया तुमको इसके बारे में?
शायद तुमको यह मालूम नहीं कि वानर सेना क्या कर सकती है !
अब वह तुम्हारी धमकियों में नहीं आनेवाली है!
उसने तुम्हारे खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज करवाई है। आदेश निकल गया है। यदि तुमलोग यहाँ फटकते हुए नज़र आए तो गिरफ्तार कर लिए जाओगे। समझे?
और यह कौन सी वानर सेना तुमने इकट्ठी की है?

अब तुमको पता चला कि लड़कियाँ जब बड़ी हो जाती हैं तो क्या करती हैं! धत्त ... भाग यहाँ से ... कभी अपनी शक्ल नहीं दिखाना।
ऐसी कहानियों को दोहराते रहना सबसे अच्छा है
...और फिर सब गायब हो गए। मुझे तो अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हो रहा था।
बेबी, तुमको यहाँ से निकलना पड़ेगा। तुम्हारी यह दबंगई बहुत दिन नहीं टिकेगी।
नहीं माँ, अब नहीं भागना है।
तुम अपनी नई दोस्तों के बूते बहादुरी दिखा रही हो। यह जो सेंटर की बातें हैं और जो नया नया शौक है, इन सबसे कुछ बदलनेवाला नहीं।
नहीं माँ, कुछ तो बदल रहा है। मेरे अंदर डर की गिरह धीरे धीरे खुल रही है।

पास में ही बेबो अभी भी अपनी किताब में व्यस्त है
बेबो, अपनी आँख फोड़ लोगी। अंदर आओ और खाना खाओ।
क्या करूँ ? मुझको तो तेज़ रोशनी की आदत ही नहीं रही।
तो, कैसा रहा तुम्हारा दिन?
आज एक बात चर्चा में आई और ...
मुझको आज एक बात सूझी... क्या पाँच साल बाद तुम रिटायर होना चाहती हो?
हाँ
ठीक है.... तो तुमको शेयर बाजार में घुसना होगा। आज मुझे पल्लव सेंटर में एक लड़की मिली। बड़ी तेज़ तर्रार... उसकी माँ ने पास के शहर में एक छोटा सा फ्लैट खरीद....
ऐसे ही बेबो, बेबी, ब्यूटी और उनकी दोस्तों की ज़िंदगी आगे बढ़ती जाती है

बेबी
कल किस वक्त?
8:15 PM
भावना
मोर्चा 11 बजे सुबह शुरू होगा...
8:16 PM
श्रेया
कोई मेरे साथ आज फिर से ज़रा पुलिस के पास चले...
8:16 PM
अंजलि
उसी समय तो मेरा बायोलॉजी का ट्यूशन है। मैं 12 बजे तक आऊँगी।
8:18 PM
ब्यूटी
मौसमी अपनी 13 साल की बेटी को ब्याह देना चाहती है। उसे डर है कि कहीं वह भाग न जाए। चलो उससे बात करते हैं।
8:19 PM

आभार

यह किताब अपने सात साथी संगठनों की भागीदारी के बिना मुमकिन नहीं थी। लड़कियों को संगठित करने से संबंधित हमारे अध्ययन में उन्होंने उदारता के साथ हिस्सा लिया। क्षेत्रीय स्तर पर होनेवाले परिसंवाद में भाग लेनेवाले सभी संगठनों और लोगों के भी हम आभारी हैं।

अपने सभी सलाहकारों का,

पारोमिता चक्रवर्ती का, साथ काम करने और विचार–विमर्श करने के दौरान मिलनेवाले उनके सहयोग और खुशी में हिस्सेदारी के लिए; रुप्सा मलिक और इशिता चौधरी का, इस अध्ययन के विचार को लेकर हमारे उत्साह में साझेदारी के लिए; कविता देवदास का, शोध और दस्तावेजीकरण में सहयोग के लिए; प्रसन्ना वी.टी., सोसम्मा मथाई, अजय सिंह, अनिल हासदा और सोहिनी राउत का, ज़बरदस्त प्रशासनिक सहयोग के लिए जिसमें वे कभी पीछे नहीं रहते; शबानी हसनवालिया का, जिन्होंने कथा–लेखन की भूमिका से आगे बढ़कर काम किया; कामेश्वरी जंध्याला का, लंबी–लंबी बातचीत और बारीकियों को उजागर करने के लिए; मंजिमा भट्टाचार्य का, जिन्होंने न केवल इस अध्ययन के विचार पर यकीन किया, बल्कि उसे आगे बढ़ाया; शालिनी जोशी का, जिन्होंने इस दस्तावेज पर काम करने के लिए अपना कीमती वक्त निकाला; इशा सिधु का, जिनके सुझावों की वजह से इस दस्तावेज में जहाँ–तहाँ जो झोल था वह खत्म हो सका; पूर्वा भारद्वाज का, धीरज और गहराई से अनुवाद करने के लिए – इन सभी का हम शुक्रिया अदा करना चाहती हैं।

साथी संगठनों की सूची

एक्शन एड
बेटी बचाओ अभियान, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

आकांक्षा सेवा सदन
मुज़फ्फरपुर, बिहार

अक्षरा
मुंबई, महाराष्ट्र

अंकुर
नई दिल्ली

भूमिका
हैदराबाद, तेलंगाना

सीबीपीएस
बंगलुरु, कर्नाटक

सिनी
मुर्शिदाबाद, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

कॉर्ड
नई दिल्ली

कोरो
मुंबई, महाराष्ट्र

क्रिया
नई दिल्ली, कोलकाता

दुर्बार महिला समन्वय कमिटी
कोलकाता, पश्चिम बंगाल

फेस
पाकुड़, झारखंड

एडुकेशन रिसोर्स यूनिट (ईआरयू)
नई दिल्ली

गौरव ग्रामीण महिला विकास मंच
पटना, बिहार

पचौड़, इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ मैनेजमेंट (आईएचएमपी)
औरंगाबाद, महाराष्ट्र

जीविका डेवलपमेंट सोसाइटी
कोलकाता, पश्चिम बंगाल

महिला जन अधिकार समिति
अजमेर, राजस्थान

महिला समाख्या कार्यक्रम
पटना, बिहार

मोहम्मद बाजार पिछड़ा वर्ग विकास सोसाइटी (बैकवर्ड क्लास डेवलपमेंट सोसाइटी)
वीरभूम ज़िला, पश्चिम बंगाल

नारी और शिशु कल्याण केंद्र
बौरिया ज़िला, पश्चिम बंगाल

निरंतर
नई दिल्ली

परिचिति
कोलकाता, पश्चिम बंगाल

पतंग
संबलपुर, उड़ीसा

पार्टनर्स फॉर लॉ इन डेवलपमेंट (पीएलडी)
नई दिल्ली

पीपुल्स एक्शन फॉर पीपुल इन नीड (पीएपीएन)
सिरमौर ज़िला, हिमाचल प्रदेश

प्रवाह
नई दिल्ली

सहयोग
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

समा
नई दिल्ली

संकल्प
बारा, राजस्थान

स्वयं
कोलकाता, पश्चिम बंगाल

तरुणी
हैदराबाद, तेलंगाना

वाचा
मुंबई, महाराष्ट्र

व्यॉइस फॉर गर्ल्स
हैदराबाद, तेलंगाना

वाई पी फाउंडेशन
नई दिल्ली

जब आप किशोरी थीं तो उस वक्त की कौन–सी मीठी याद आपको कौंधती है? और वह कौन–सी याद है जो आज भी रोंगटे खड़े कर देती है? स्कूल से पहले और बाद गपशप का अंतहीन सिलसिला, किसी पर फिदा होकर अपनी सुधबुध भुला देना, घर देर से आने पर लगनेवाले थप्पड़ और ताने की टीस – इनमें से क्या याद है? क्या पहली माहवारी की छुपम–छुपाई और किसी लड़के के छेड़ने पर आग बबूला हो जाना याद है? निपट अकेलापन याद है या दूसरों द्वारा अनचाहे साँचों में ढाला जाना याद है?

ये किस्से अलग–अलग जगहों की एकदम अलग–अलग लड़कियों के हैं। वे किसान, घर की साज–सँभाल करनेवाली, बच्चों की देखरेख करनेवाली खेतों में काम करनेवाली, मज़दूर, यौनकर्मी माँओं की बेटियों के रूप में दुनिया से जूझ रही हैं, लेकिन भूलें नहीं कि वे सब किशोरियाँ हैं। ये किस्से बताते हैं कि किशोरीपन एक डरावने अहसास से भरे और दुनिया में अपने आप को सबसे अलग–थलग महसूस करने की उम्र होती है। यह अनोखा नहीं है। सब जगहों की लड़कियाँ ऐसा ही महसूस करती हैं। इन किस्सों से पता चलता है कि ये लड़कियाँ जब इस कठोर दुनिया से अकेले नहीं, मिलकर लोहा लेती हैं तो किस तरह की संभावनाएँ उभरती हैं।

हाल के दिनों में किशोरियों से जुड़ी नीतियों, परियोजनाओं और दास्तानों की दुनिया भर में चर्चा है। सब उन छुपी हुई संभावनाओं को निखारने का दावा कर रहे हैं, लेकिन किसी दरख्त के नीचे बैठी लड़कियों के झुंड की फुसफुसाहटों पर कान दें तो क्या हमें कुछ नया सुनने को मिलेगा?

SADBHAVANA TRUST

130, Jagdish Chandra Bose Road,
Qaiserbagh, Lucknow